छू... मंतर

गीता धर्मराजन

चित्राँकनः प्रियंका पचपांडे

कथा की ३००एम थिंकबुक

भोपाली गाँव में जीवूबा नाम की लड़की रहती थी। वह गाना बहुत अच्छा गाती थी।

उसकी माँ कहती थी, “जब तुम्हारे बच्चे होंगे तो उन्हें सुलाने में तुम्हें कोई मुश्किल न होगी।”

लेकिन जीवूबा तो दुनिया की सबसे अच्छी गायिका बनना चाहती थी। वह जंगल की देवी, दम्मू अप्सरा, के पास गयी।

“बेटी, मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती,” वह दुखी स्वर में बोली, “तुम्हारे गाँव में लड़कियों की शादी जल्दी कर दी जाती है!”

“कुछ तो कीजिए,” जीवूबा ने मिन्नत की। और फिर...

“अरे वाह!” दम्मू बोली, “मैं गाँववालों पर जादू कर दूँगी ताकि वे अपनी लड़कियों की शादी करवाना भूल जाएँ! पर हाँ, अगर किसी ने ‘शादी’ शब्द कहा तो जादू टूट जाएगा!”

और फिर...
स्कूल जाओ, सुल्ताना,
डॉक्टर बनो।
जाओ, जीवूबा,
गायिका बनो।
बढ़ई बनो,
मैरी।

यहाँ तक कि सरपंच जी भी बोले,
“जो भी अपनी बेटियों को स्कूल
भेजेंगे उन्हें इनाम मिलेगा।”

सभी लड़कियाँ स्कूल
जाती रहीं।

दो साल बीत गए।

एक दिन जीवूबा के चाचाजी उससे मिलने आए।

“जीवूबा अठारह साल की हो गई और अब तक इसकी शादी नहीं करवाई?” उन्होंने इतनी ज़ोर से पूछा कि सारे गाँव ने सुना!

दम्मू अप्सरा का जादू टूट गया।

भोपाली गाँव के सभी माता–पिता अपनी लड़कियों की ओर देखने लगे – पढ़ी–लिखी, स्वस्थ और हिम्मतवाली लड़कियाँ!

आस–पास के सभी गाँवों से लोग भोपाली की उन पढ़ी–लिखी पर कुँवारी लड़कियों को देखने आते।

“हा! हा!” वे हँसते।

लेकिन एक मेहमान ने एक घड़े में नल से पानी गिरता देखा और पूछ बैठा, “क्या आप लोग नहर से पानी लेने नहीं जाते?”

जीवूबा की माँ मुस्कुराई, “नहीं, अब हमें दूर नहीं जाना पड़ता। हमारी लड़कियों ने हमारी मदद की। हम लोगों ने पैसे बचाए। शहर से पाईप खरीदे और पानी के नलके लगवा लिए।”

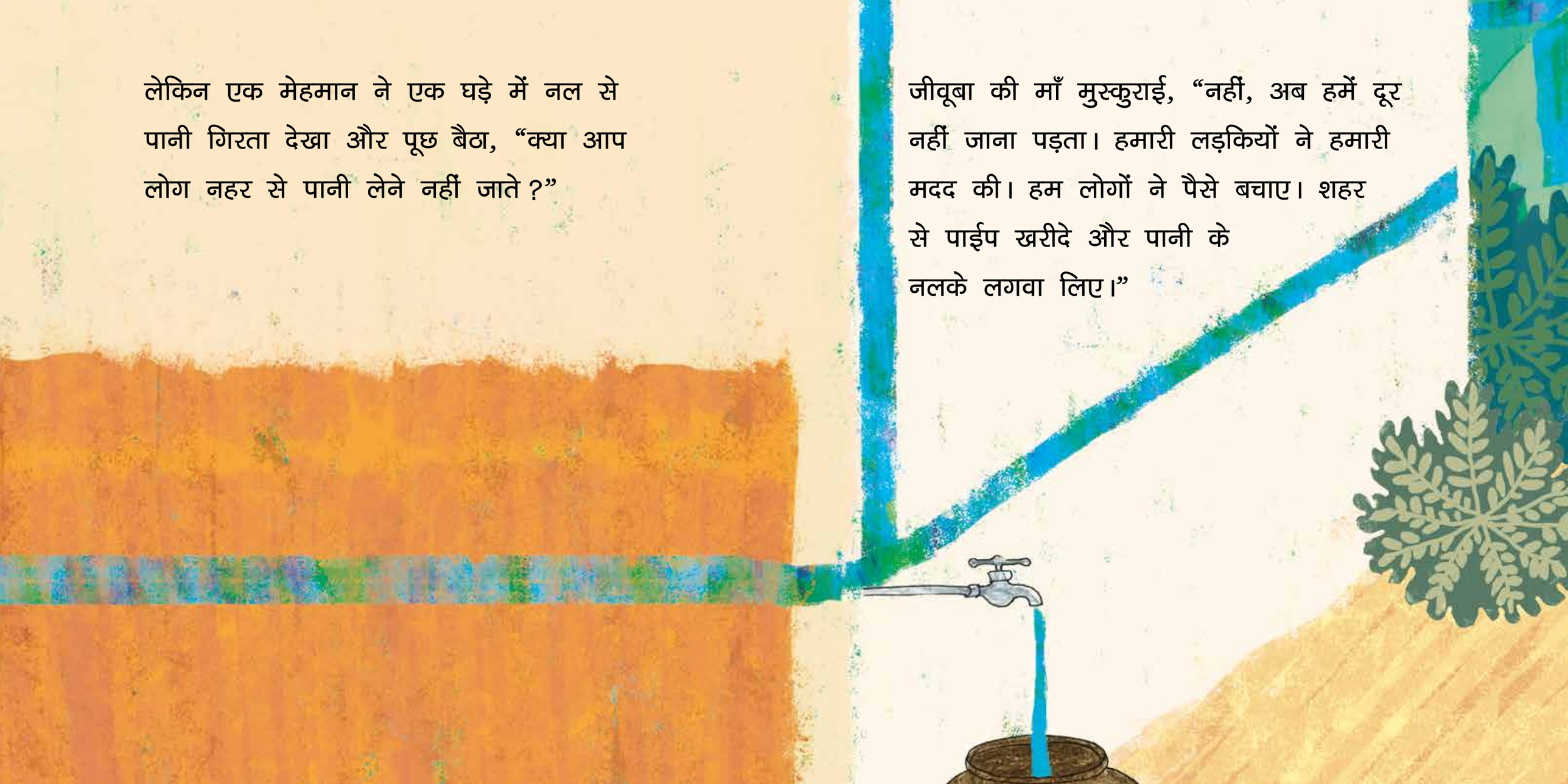

“हमारे यहाँ शौच घर भी है,” सुल्ताना की माँ बोली। “अँधेरे में खेत में जाना बहुत मुश्किल होता है?”

“और इतना खुला भी होता है!” दूसरे मेहमान ने कुछ ईर्ष्या से भरकर कहा, “मैं तो अक्सर ठीक से खाना भी नहीं खाती कि कहीं मुझे दिन-दहाड़े खेत में न जाना पड़ जाए।”

“हमारी लड़कियाँ हमें बताती हैं कि कब क्या उगाना–बोना चाहिए, और कहाँ से बढ़िया खाद मिलती है,” मैरी के पिता ने गर्व से कहा।

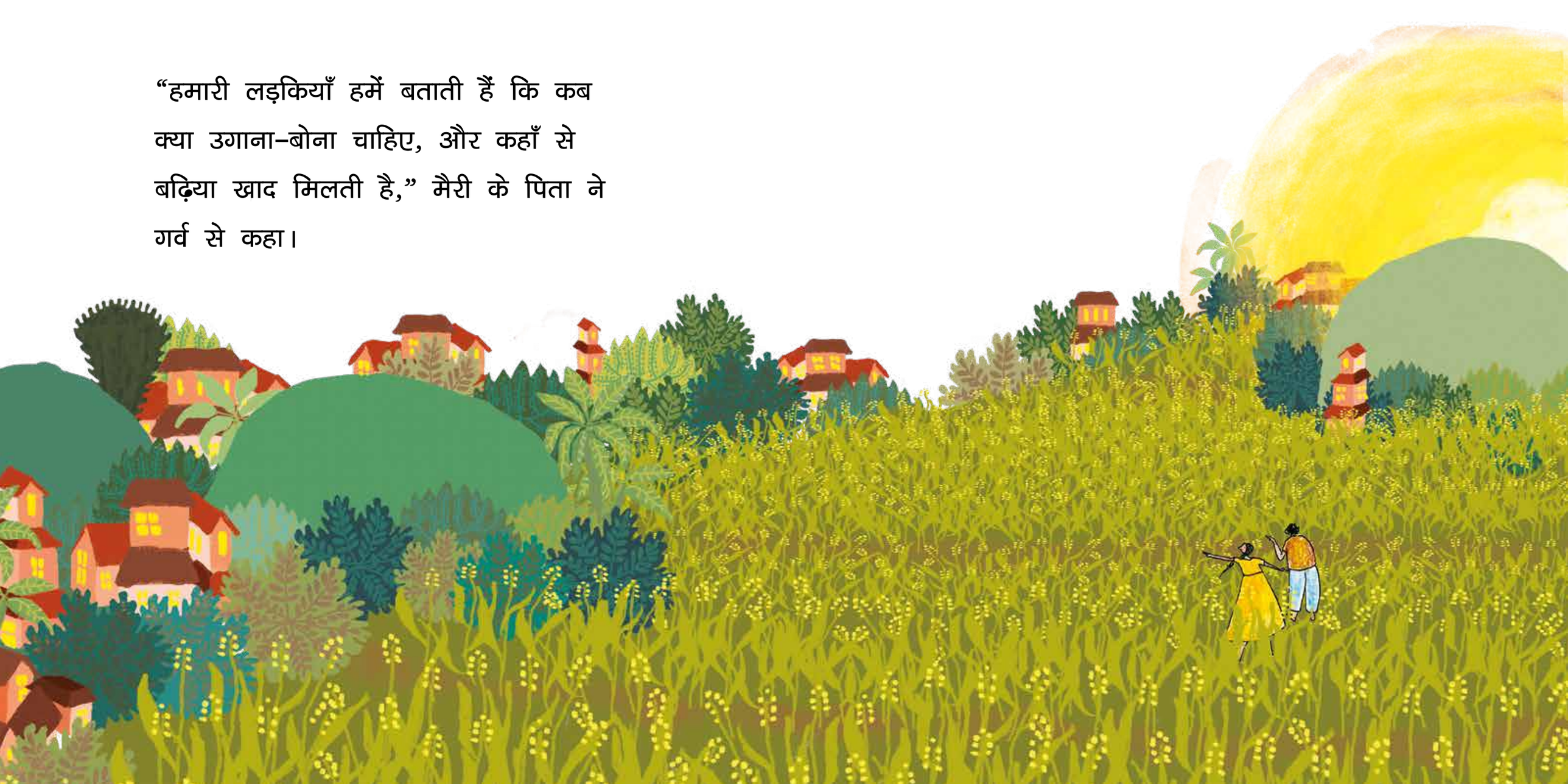

“आइए, हमारी सहकारी दुकान देखिए।”

“कमाल है!” मेहमानों ने कहा, “क्या आपके गाँव की लड़कियाँ हमारे गाँव की लड़कियों को ये सब सिखा सकती हैं?”

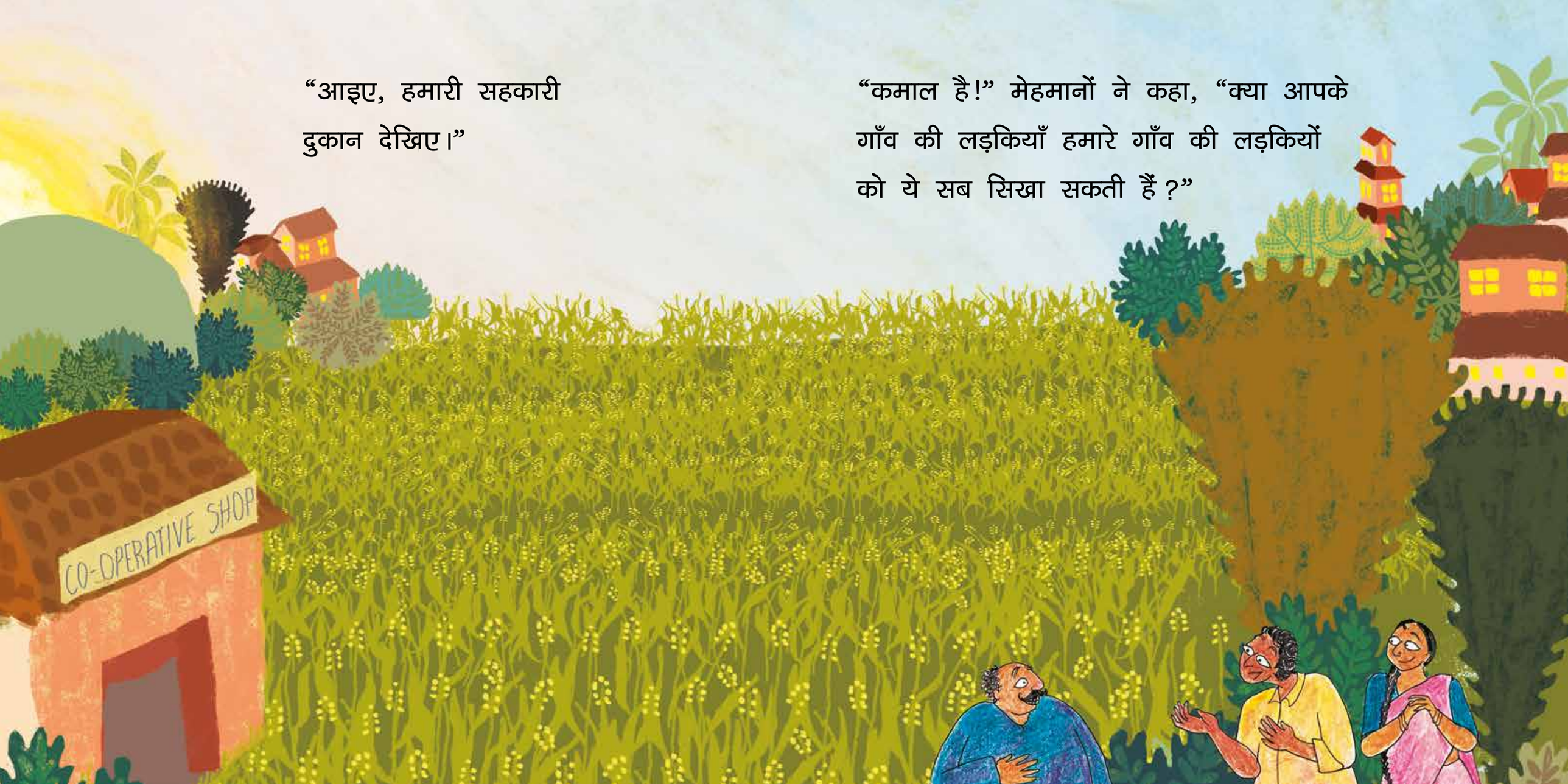

तो फिर भोपाली गाँव की पढ़ी-लिखी लड़कियों का क्या हुआ?

आज सुल्ताना डॉक्टर बन चुकी है। मैरी बढ़ई का काम सिखाती है। भोपाली में बहुत से महिला मंडल और सहकारी दुकाने हैं।

सभी लड़कियाँ स्कूल जाती हैं।

और जीवूबा का क्या हुआ ?

क्यों, क्या तुमने उसे टी. वी. पर गाते हुए नहीं देखा ?

सोचो

क्या आपको लगता है कि हरेक को अपने जीवन के विषय में निर्णय लेने का अधिकार है? क्यों/क्यों नहीं?

पूछो

क्या हर किसी के लिए शिक्षित होना ज़रूरी है, खासकर लड़कियों के लिए? क्या आपको लगता है कि शिक्षित लड़कियाँ देश का भविष्य उज्जवल बना सकती हैं?

चर्चा करो

अगर दम्मू अपना जादू न चलाती तो भोपाली की लड़कियों की शादी जल्दी हो जाती और उनके सपने अधूरे रह जाते। आप लड़कियों की पढ़ाई के लिए और क्या सुझाव दे सकते हैं?

करो

भारत में हर छः लड़कियों में से एक की शादी अठारह वर्ष से कम आयु में कर दी जाती है। उन्हें अपने सपने पूरे करने का अवसर नहीं मिलता।

- आप जो परिवर्तन समाज में देखना चाहते हैं, उसे अपने आप से शुरू कीजिए।
- लड़कियों के अधिकारों के लिए अभियान कीजिए।
- जागरुकता फैलाइए।
- लड़कियों और लड़कों के बीच अंतर मत कीजिए।
- हम सभी समान हैं – समान अधिकार और कर्तव्यों के साथ।

गीता धर्मराजन को बेहद पसंद है लिखना, विशेष रूप से बच्चों के लिए। इन्हें 2012 में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

प्रियंका पचपांडे को नन्हे पाठकों के लिए चित्र बनाना बेहद अच्छा लगता है।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग*

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा 2017, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

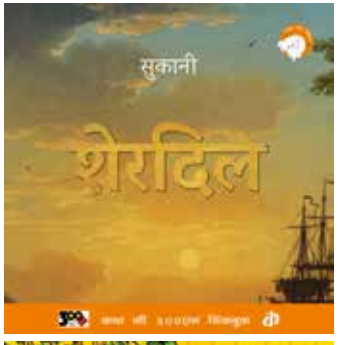

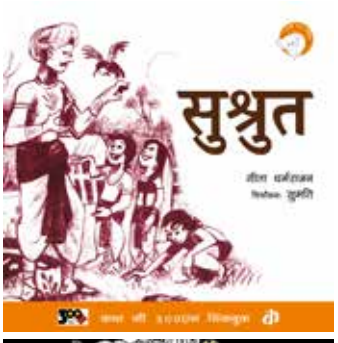

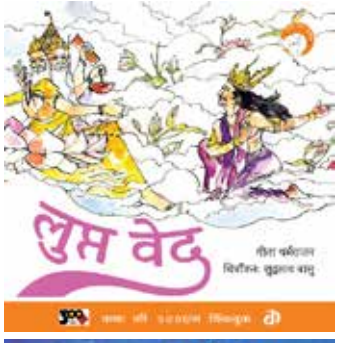

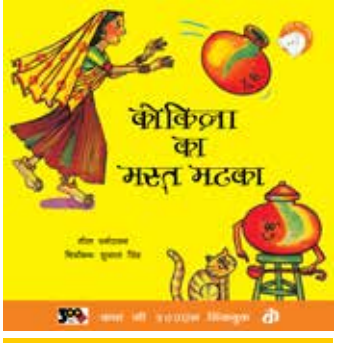

FOR OUR BOOKS

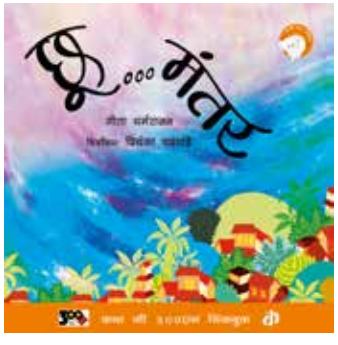

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

a katha book
for children
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx

इसकी ऑरेंज शृंखला में